CEDSI
CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

# CEDSI TIMES

*Your Skilling Partner...*

## सांगली में आईवीएफ भ्रूण प्रत्यारोपण के माध्यम से मादा बछड़े का जन्म

डेयरी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण विकास में, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की सहायक कंपनी एनडीडीबी डेयरी सर्विसेज (एनडीएस) ने 'लक्ष्मी' नाम की पहली मादा बछड़े के जन्म की घोषणा की है। यह मील का पत्थर उपलब्धि पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी), भारत सरकार के त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम के माध्यम से आईवीएफ भ्रूण प्रत्यारोपण (एबीआईपी-आईवीएफ-ईटी) के माध्यम से संभव हुई।

सितंबर 2022 में आईवीएफ भ्रूण प्रत्यारोपण के साथ शुरू हुए 9 महीने के समर्पित प्रयासों के बाद, कार्यक्रम के शुरुआती परिणाम आशाजनक साबित हो रहे हैं। अब तक तेरह स्वस्थ कन्याओं के जन्म की पुष्टि हो चुकी है, जिसमें सांगली के इस्लामपुर में राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ में आईवीएफ भ्रूण के साथ सरोगेट द्वारा प्रत्यारोपित की गई लक्ष्मी पहली मादा बछड़ी है, इस सफलता के बाद 250 से अधिक अतिरिक्त जन्म होने की उम्मीद है। उन गायों और भैंसों से जिनकी आईवीएफ भ्रूण प्रत्यारोपण के माध्यम से गर्भधारण की पुष्टि हुई है।

## सरकार ने बुन्देलखण्ड परियोजनाओं के लिए 225 करोड़ रुपये आवंटित किये

राज्य सरकार ने बुन्देलखण्ड पैकेज के तीसरे चरण के तहत परियोजनाओं को पूरा करने के लिए 225 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत करके बुन्देलखण्ड में विकास प्रक्रिया को तेज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विभागों से 60.70 करोड़ रुपये के अधिशेष सहित 116.72 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि का उपयोग क्षेत्र के समग्र विकास के लिए किया जाएगा।

225 करोड़ रुपये का आवंटन बुंदेलखंड के विकास को तेजी से आगे बढ़ाने और क्षेत्र की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विभिन्न विभागों में उपलब्ध अधिशेष राशि से अतिरिक्त धनराशि का निवेश यह सुनिश्चित करने के लिए एक विवेकपूर्ण वित्तीय दृष्टिकोण को दर्शाता है कि विकास परियोजनाओं को पर्याप्त रूप से समर्थन दिया जाता है।

स्वीकृत परियोजनाएं नमामि गंगे पहल के तहत पशुधन, कृषि, ग्रामीण जल आपूर्ति और गंगा नदी के कायाकल्प सहित कई क्षेत्रों को कवर करती हैं। इन पहलों का उद्देश्य क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को बढ़ाना, कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना और जल संसाधन प्रबंधन में सुधार करना है।

## हैदराबाद में भारत का पहला पशुधन, डेयरी और मत्स्य पालन व्यापार एक्सपो

राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी) के पूर्व मुख्य कार्यकारी डॉ. सी सुवर्णा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान इन उद्योगों में तेलंगाना और आंध्र प्रदेश दोनों की अपार संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए इस कार्यक्रम की घोषणा की।

बिजनेस-टू-बिजनेस एक्सपो, हिटेक्स और एक्वा फार्मिंग टेक्नोलॉजीज एंड सॉल्यूशंस प्राइवेट द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। लिमिटेड, देश भर से 100 से अधिक प्रदर्शकों को शामिल करेगा। हितेक्स के व्यापार प्रमुख टी जी श्रीकांत ने पशु प्रोटीन व्यापार, प्रसंस्करण, प्रौद्योगिकी, मशीनरी, खुदरा, रसद और कोल्ड-चेन उद्योगों सहित कई क्षेत्रों की भागीदारी पर प्रकाश डाला।

हैदराबाद को भारत के उद्घाटन पशुधन, डेयरी और मत्स्य पालन व्यापार एक्सपो और ज्ञान कॉन्क्लेव (एलडीएफ इंडिया) के लिए मेजबान शहर के रूप में चुना गया है। हाईटेक्स प्रदर्शनी केंद्र में सितंबर में होने वाले तीन दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य इन क्षेत्रों में क्षमता, ताकत और निर्यात के अवसरों को प्रदर्शित करना है।

## केरल में डेयरी किसानों के लिए व्यापक बीमा योजना

वेबसाइट बनाने के लिए टीआरसीएमपीयू की सराहना करते हुए, जो ग्राहकों को आसानी से डेयरी उत्पादों को ऑनलाइन ऑर्डर करने में सक्षम बनाता है, मंत्री ने सहकारी सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित करते हुए, अन्य राज्यों के ब्रांडों द्वारा आक्रामक सीमा पार बिक्री को संबोधित करने के लिए राज्य सरकार के प्रयासों पर जोर दिया।

त्रिवेन्द्रम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (टीआरसीएमपीयू) की आधिकारिक वेबसाइट और ई-कॉमर्स पोर्टल के लॉन्च के दौरान, मंत्री ने कहा कि बीमा योजना, जिसे हाल ही में बंद कर दिया गया था, डेयरी किसानों और उनके लिए स्वास्थ्य और जीवन बीमा कवरेज प्रदान करेगी। परिवारों के साथ-साथ उनके पशुधन की सुरक्षा भी।

सुश्री चिंचुरानी ने दूध देने के दो सत्रों के बीच अंतराल बढ़ाने, अधिक व्यक्तियों को डेयरी फार्मिंग में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करने और उच्च गुणवत्ता और किफायती पशु आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसी प्रथाओं को बढ़ावा देकर केरल में दूध उत्पादन बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

केरल के पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री सुश्री जे चिंचुरानी ने कहा, "दैनिक किसानों के लिए व्यापक बीमा योजना, क्षीरा संथवनम, राज्य सरकार द्वारा इसके लिए मंजूरी देने के साथ जल्द ही पुनर्जीवित की जाएगी"। मंत्री ने त्रिवेन्द्रम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (टीआरसीएमपीयू) की आधिकारिक वेबसाइट और ई-कॉमर्स पोर्टल लॉन्च करते हुए यह बात कही।

इसके अलावा, कार्यक्रम के दौरान, सुश्री चिंचुरानी ने 2022-23 में चार दक्षिणी जिलों के दुग्ध सहकारी समितियों के हाल ही में सेवानिवृत्त हुए 36 सचिवों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए सम्मानित किया। उन्होंने इस विदाई कार्यक्रम के माध्यम से एक मॉडल स्थापित करने के लिए टीआरसीएमपीयू की सराहना की जिसका अनुकरण किया जा सकता है।

## हरियाणा पशुपालन विभाग डायल 112 से प्रेरित 200 पशु एम्बुलेंस पेश करेगा

1 जुलाई 2023 को हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जे.पी. दलाल ने पुलिस पीसीआर की डायल 112 आपातकालीन सेवा की तर्ज पर 200 पशु एम्बुलेंस तैयार करने की योजना की घोषणा की। यह घोषणा राज्य के भिवानी जिले के बहल में लुवास हिसार द्वारा स्थापित हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र के उद्घाटन के दौरान की गई थी।

इस पहल के पीछे का उद्देश्य पारंपरिक खेती के अलावा पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी जैसे आय के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देकर किसानों की आय में वृद्धि करना है। पशुधन की भलाई सुनिश्चित करने और समय पर चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए, पशुपालन विभाग कुल 200 पशु चिकित्सा एम्बुलेंस खरीदेगा, जिनमें से 70 पहले ही हासिल कर ली गई हैं और शेष 130 जल्द ही खरीदी जाएंगी।

एम्बुलेंस एक समर्पित टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर से लैस होंगी, जिससे पशुपालक अपने बीमार जानवरों के लिए अपने दरवाजे पर चिकित्सा सहायता का अनुरोध कर सकेंगे। इस पहल का उद्देश्य किसानों को सुलभ पशु चिकित्सा देखभाल प्रदान करना है, जिससे उन्हें इलाज के लिए लंबी दूरी की यात्रा करने की आवश्यकता कम हो।

हरियाणा सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर उनकी उपज की खरीद सुनिश्चित करने और फसल बुआई अवधि के दौरान उर्वरक और बीज जैसी अन्य आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करके किसानों का समर्थन करने के लिए कदम उठाए हैं। इसके अलावा, सरकार प्राकृतिक आपदाओं से क्षतिग्रस्त फसलों के लिए पूरा मुआवजा प्रदान करती है, जिससे किसानों के लिए खेती कम जोखिम भरा उद्यम बन जाती है।

पशु विज्ञान केंद्र विभिन्न पशु रोगों के समाधान के लिए एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, सर्जरी और स्त्री रोग विज्ञान के लिए व्यापक सुविधाएं प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, केंद्र पशुओं की बेहतर नस्ल पैदा करने के लिए भ्रूण स्थानांतरण प्रौद्योगिकी (ईटीटी) पर ध्यान केंद्रित करेगा जो अधिक मात्रा में दूध देती है और समग्र नस्ल की गुणवत्ता में सुधार करती है।

## मध्य प्रदेश में सागर विश्वविद्यालय गायों के अनुसंधान और संरक्षण के लिए पहला 'गाय छात्रावास' का निर्माण करेगा

मध्य प्रदेश में सागर विश्वविद्यालय गायों के लिए एक समर्पित छात्रावास का निर्माण करने के लिए तैयार है। विश्वविद्यालय ने गौ संवर्धन और संरक्षण पर शोध करने के लिए केंद्रीय पशुपालन विभाग के साथ एक समझौता किया है। समझौते के हिस्से के रूप में, डेयरी इंजीनियरिंग विभाग और कामधेनु पीठ के सहयोग से विश्वविद्यालय में एक कामधेनु पीठ भी स्थापित की जाएगी।

हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान, केंद्रीय मंत्री पुरूषोत्तम रूपाला ने छात्रों के लिए उसी तरह गायों के लिए छात्रावास स्थापित करने का विचार व्यक्त किया, ताकि उन लोगों को सुविधा मिल सके जो घर पर गाय रखने में असमर्थ हैं। केंद्रीय मंत्री ने कामधेनु पीठ की स्थापना के माध्यम से गाय के संवर्धन और संरक्षण में सागर विश्वविद्यालय की पहल की सराहना की, और विश्वविद्यालय के विशाल परिसर को गाय छात्रावास के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में रेखांकित किया।

सागर विश्वविद्यालय में गायों और उनकी संतानों पर अनुसंधान करने के लिए आधुनिक तकनीक और सुविधाओं से सुसज्जित अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं। सागर में कामधेनु पीठ की स्थापना से सागर और बुन्देलखण्ड क्षेत्र के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

अनुसंधान पहल पशुपालन और पशुधन संरक्षण के वैज्ञानिक तरीकों पर ध्यान केंद्रित करेगी, जिसमें युवाओं को गाय पालन में उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित करने पर जोर दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, पंचगव्य जैसे गाय उत्पादों पर शोध किया जाएगा, जिसमें दूध, मूत्र, गोबर, घी और दही शामिल हैं। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. विवेक जयसवाल ने विश्वविद्यालय में चार नए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के शुरू होने पर खुशी व्यक्त की, जिससे विश्वविद्यालय की अनुसंधान और अध्ययन क्षमताओं में और वृद्धि होगी।

## सहकारी डेयरी गुजरात के मेहसाणा में अपना पहला सैनिक स्कूल स्थापित करेगी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह एक सहकारी डेयरी द्वारा प्रबंधित किए जाने वाले भारत के पहले सैनिक स्कूल का वस्तुतः उद्घाटन करने के लिए तैयार हैं। प्रतिष्ठित 'श्री मोतीभाई आर चौधरी सागर सैनिक स्कूल' गुजरात के मेहसाणा शहर से लगभग 11 किमी दूर बोरियावी गांव में स्थित होगा। उद्घाटन समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल होंगे।

11 एकड़ के विशाल परिसर में फैले सैनिक स्कूल का निर्माण मेहसाणा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है, जो दूधसागर डेयरी के नाम से प्रसिद्ध है। डेयरी गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड (जीसीएमएमएफ) से संबद्ध है, जो प्रसिद्ध अमूल ब्रांड को बढ़ावा देती है। 75 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली यह अग्रणी परियोजना देश में किसी सहकारी संस्था द्वारा प्रबंधित सैनिक स्कूल का पहला उदाहरण होगी।

शिक्षा के क्षेत्र में सहकारी डेयरी का उद्यम डेयरी उत्पादन से परे अपनी विशेषज्ञता का विस्तार करके समुदाय की सेवा करने के प्रति इसके समर्पण को रेखांकित करता है। यह नया शैक्षणिक संस्थान छात्रों को सशक्त बनाने और उनकी प्रतिभा का पोषण करने, उन्हें व्यापक सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए एक उत्प्रेरक बनने के लिए तैयार है।

एक आधिकारिक बयान में उल्लेख किया गया है, "यह देश का पहला सैनिक स्कूल होगा जिसे एक सहकारी संस्था द्वारा प्रबंधित किया जाएगा।" स्कूल की स्थापना समुदाय के उत्थान और भावी पीढ़ियों के समग्र विकास में योगदान करने के लिए सहकारी के चल रहे प्रयासों के अनुरूप है। मेहसाणा और उससे आगे.

# दूध उत्पादकता वृद्धि को अनलॉक करना: भारत के डेयरी क्षेत्र में सीईडीएसआई की महत्वपूर्ण भूमिका

**पृष्ठभूमि**

भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक है, फिर भी देश अपने वैश्विक समकक्षों की तुलना में कम दूध उत्पादकता से जूझ रहा है। भारत में डेयरी कौशल उत्कृष्टता केंद्र (सीईडीएसआई) इस मुद्दे को संबोधित करने की आवश्यकता को पहचानता है और दूध उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए समर्पित है। इस ब्लॉग में, हम भारत में दूध उत्पादकता के वर्तमान परिदृश्य का पता लगाएंगे, इसकी कमी में योगदान देने वाले कारकों की पहचान करेंगे, और इस बात पर प्रकाश डालेंगे कि सीईडीएसआई की पहल कैसे सकारात्मक बदलाव ला सकती है। हम दूध उत्पादकता में सुधार के महत्व पर भी चर्चा करेंगे और इस संदर्भ में एआई और एमएल की क्षमता पर चर्चा करेंगे।

**वर्तमान परिदृश्य और चुनौतियाँ:**

डेयरी मवेशियों की बड़ी आबादी होने के बावजूद, भारत की दूध उत्पादकता अन्य प्रमुख दूध उत्पादक देशों से पीछे है। भारत में प्रति गाय औसत दूध उपज लगभग 1,500-1,800 लीटर प्रति वर्ष है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय देशों जैसे देशों में प्रति गाय प्रति वर्ष 10,000 लीटर से अधिक दूध की उपज होती है। इस उत्पादकता अंतर में कई कारक योगदान करते हैं।

· **अपर्याप्त पोषण**- यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है, भारत में कई डेयरी पशु संतुलित और गुणवत्तापूर्ण चारे की कमी से पीड़ित हैं। अपर्याप्त उपलब्धता और पौष्टिक चारे तक पहुंच के कारण पशु अल्पपोषित हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप दूध उत्पादन कम हो जाता है।

· **खराब प्रजनन प्रथाएं**- बेहतर आनुवंशिक सामग्री तक सीमित पहुंच दूध उत्पादकता को प्रभावित करती है। बेहतर बैल वीर्य और कृत्रिम गर्भाधान सेवाओं को बढ़ावा देने सहित आनुवंशिक सुधार कार्यक्रमों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

**दूध उत्पादकता बढ़ाने में सीईडीएसआई की भूमिका**

सीईडीएसआई भारतीय डेयरी किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने और दूध उत्पादकता में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। अपने व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, सीईडीएसआई का लक्ष्य किसानों को आधुनिक डेयरी फार्मिंग प्रथाओं, पोषण प्रबंधन और प्रजनन तकनीकों में ज्ञान और कौशल के साथ सशक्त बनाना है। सलाहकार सेवाएं प्रदान करके और कार्यशालाएं आयोजित करके, सीईडीएसआई किसानों को दूध उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए संतुलित पोषण और इष्टतम प्रजनन रणनीतियों के महत्व को समझने में मदद करता है।

अपर्याप्त पोषण के मुद्दे से निपटने के लिए, सीईडीएसआई उच्च उपज वाली चारा फसलों की खेती, फसल अवशेषों के उपयोग और आधुनिक फ़ीड प्रबंधन तकनीकों को अपनाने को बढ़ावा देता है। संतुलित आहार और उचित भोजन प्रथाओं के महत्व पर जोर देकर, सीईडीएसआई किसानों को फ़ीड उपयोग को अनुकूलित करने और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन करता है।

सीईडीएसआई बेहतर प्रजनन प्रथाओं को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसानों को कृत्रिम गर्भाधान के लाभों के बारे में शिक्षित करता है, उन्हें गुणवत्तापूर्ण बैल वीर्य और उन्नत प्रजनन तकनीकों तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करता है। डेयरी पशुओं की आनुवंशिक क्षमता को बढ़ाकर, सीईडीएसआई का लक्ष्य दूध उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार करना है।

**आजीविका संवर्धन** - दूध उत्पादकता बढ़ाना कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, इसका सीधा असर डेयरी किसानों की आय और आजीविका पर पड़ता है। दूध की पैदावार बढ़ाकर, किसान उच्च राजस्व उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर में सुधार और आर्थिक विकास होगा।

**मांग-आपूर्ति अंतर**- यह बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए दूध की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करेगा। भारत की जनसंख्या बढ़ रही है और इसके साथ ही दूध और डेयरी उत्पादों की मांग भी बढ़ रही है। उत्पादकता बढ़ाने से आपूर्ति-मांग के अंतर को पाटने और आयात पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी।

बढ़ी हुई दूध उत्पादकता डेयरी उद्योग के समग्र विकास में योगदान करती है। यह घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में भारतीय डेयरी उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में इस क्षेत्र के योगदान को बढ़ावा मिलता है।

**उत्पादकता बढ़ाने के लिए एआई और एमएल का लाभ उठाना:**

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) दूध उत्पादकता वृद्धि में क्रांति लाने की अपार संभावनाएं प्रदान करते हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ मूल्यवान अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने के लिए दूध की उपज रिकॉर्ड, आनुवंशिक जानकारी और पर्यावरणीय कारकों सहित बड़े डेटासेट का विश्लेषण कर सकती हैं।

एआई और एमएल जानवरों में संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान करने, समय पर हस्तक्षेप और निवारक उपायों को सक्षम करने में सहायता कर सकते हैं। वे पशु पोषण, विकास पैटर्न और दूध उत्पादन पर डेटा का विश्लेषण करके भोजन व्यवस्था को भी अनुकूलित कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता में सुधार होगा।

सीईडीएसआई डेयरी फार्मिंग में एआई और एमएल की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानता है। इन प्रौद्योगिकियों को अपने प्रशिक्षण और सलाहकार सेवाओं में एकीकृत करके, सीईडीएसआई किसानों को दूध उत्पादकता बढ़ाने, प्रजनन के अवसरों की पहचान करने और लक्षित प्रबंधन प्रथाओं को लागू करने के लिए डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद कर सकता है।

**निष्कर्ष:**

भारत में दूध उत्पादकता बढ़ाने के लिए सीईडीएसआई की प्रतिबद्धता डेयरी क्षेत्र की वृद्धि और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण, पोषण प्रबंधन और प्रजनन प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करके, सीईडीएसआई किसानों को दूध की पैदावार बढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से सशक्त बनाता है। इसके अलावा, एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों का एकीकरण डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को बदलने, उत्पादकता को अनुकूलित करने और भारतीय डेयरी उद्योग के लिए समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करने की अपार संभावनाएं रखता है। सीईडीएसआई की पहल और प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों के साथ, हम भारत के डेयरी क्षेत्र की पूरी क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और दूध और डेयरी उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा कर सकते हैं।

## हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

# CEDSI : रिविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

## किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

## एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

## डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

**सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया**